International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 1, Jan.-Feb., 2025

भाषा की अवधारण एवं हिन्दी भाषा का सतत् विकास

शोभा मेघवाल

प्रस्तावना

हिन्दी भाषा आर्य भाषा परिवार या भारोपीय भाषा परिवार की भाषा है। भारत में आर्य परिवार और द्रविड परिवार की भाषाओं के बोलने वालों की संख्या अधिक है। उत्तार में आर्य परिवार तथा दक्षिण भारत में द्रविड परिवार की भाषायें बोली जाती है। भारोपीय परिवार की प्राचीन भाषाओं में संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन फ्रांसीसी, अवेस्ता, बीक, लेटिन आदि तथा आधुनिक भाषाओं में अंग्रेजी, रूसी, जर्मन फ्रांसीसी, पुर्तगाली, हिन्दी, बंगला, गुजराती आदि है। भारतीय आर्य परिवार की भाषाओं से हिन्दी भाषा विकसित हुई है। ''भाषा शब्द की व्युत्पत्ति पर ध्यान देने से इस अर्थ की पुष्टि होती हैं। भाषा संस्कृत की भाष् (भ्वादिगणी) धातु से बना है। भाष् धातु का अर्थ हैं (भाष व्यक्तायां वाचि) व्यक्त वाणी। 'भाष्यते व्यक्तवाम् रूपेण अभिव्यज्यते इति भाषा' अर्थात् व्यक्त वाणी के रूप में जिसकी अभिव्यक्ति की जाती है। है। उसे भाषा कहते हैं'' आवश्यकता आविष्कार की जननी है। और भाषा मनुष्य की आवश्यकता हैं भाषा के विकास के चरणो मे ध्वन्यात्मक माध्यम जैसे पशु, पक्षियों की बोली (तोता, बन्दर, गाय, आदि की आवाज) को भाषा शब्द प्रयोग किया जाता हैं। आंगिक संचालन या इंगित माध्यम जिसमें मानवीय शरीर के विभिन्न अंगो आख, हाथ, आदि के द्वारा विचारो की अभिव्यक्ति को भाषा कहा गया जैसे कविवर बिहारी ने आंगिक संचालन के माध्यम से नायक और नायिका दोनो के बीच आखों के व्दारा हृदय के भावों को व्यक्त करने का वर्णन दोहे में किया।

'कहत, नटत, रीझत, खिजत,
मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भवन में करत हैं.
नैननु ही सब बात।।'

सांकेतिक माध्यम को भी भाषा कहा जाता है। इसमें संकेतो के माध्यम से व्यवहार किया जाता है। मंदिर की घंटी मंदिर में पूजा पाठ की और संकेत करती है। इसी प्रकार रेलवे में लाल हरी झंडी चौराहो पर यातायात नियंत्रण में लाल, हरी, पीली बत्ती का प्रयोग सांकेतिक माध्यम के उदाहरण है।

भाषा वैज्ञानिकों की दृष्टि से ध्वन्यात्मक माध्यम आंगिक तथा सांकेतिक माध्यम को भाषा नहीं माना गया है। क्योकि इसमें गंभीर भावों को अभिव्यक्त करने की कार्यक्षमता नहीं है। इस कारण मानव अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिये जिस व्यक्त वाणी का प्रयोग करता है। उसे भाषा कहते है।

'सुप्रसिद्ध वैयाकरण आचार्य कामता प्रसाद गुरू ने लिखा है– भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों के सामने भलीभाति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार भलीभाति समझ सकता है।'

'मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान प्रदान करने के लिये व्यक्त ध्वनि संकेतो का जो आदान प्रदान होता है उसे भाषा कहते है।'

भाषा के स्वरूप और विशेषताओं मे यदि देखा जाय तो भाषा सामाजिक वस्तु हैं। समाज को एक सूत्र में बाधने का कार्य भाषा के माध्यम से होता है। यह भाव सम्प्रेषण के साथ ही पैतृक नहीं होती हैं बल्कि अर्जित की जाती हैं। भाषा की एक भौगोलिक सीमा होती हैं इसलिए एक कहावत हैं–

'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी'

साथ ही भाषा मे चिरपरिवर्तन शीलता का गुण विधमान रहता हैं। भाषा परिवर्तन होती रहती हैं।

भाषा के विविध रूपो में बोली, विभाषा, उपभाषा परिनिष्ठित भाषा, साहित्यक भाषा विशिष्ठ भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा अंतर राष्ट्रीय भाषा आदि का स्थान आता है। विद्धानो ने बोली और विभाषा शब्द को समानार्थक माना हैं लेकिन भाषा वैज्ञानिको की दृष्टी से दोनो में अंतर हैं बोली को भाषा की लघु इकाई के रूप में जाना जाता हैं। किसी सीमित भौगोलिक क्षेत्र मे रहने वालो लोगो की बोल चाल की भाषा बोली कहलाती हैं। विभाषा मे जब कोई बोली का विस्तार होता हैं या बोली का विस्तृत और बड़ा रूप बन जाता हैं तो उसे विभाषा कहा जाता है। परिनिष्ठित भाषा में जब कोई विभाषा का व्याकरण निर्मित हो जाता है और दैनिक व्यवहार में सभ्य शिक्षित वर्ग इसे विचार विनिमय में प्रयोग करने के साथ अपने लेखन कार्य में इसका उपयोग करने लगता है। तो वह विभाषा परिनिष्ठित भाषा वन जाती हैं। इस प्रकार भाषा के निर्माण के चरण को इस प्रकार समझा जा सकता है– बोली––>विभाषा/उपभाषा––>भाषा।

साहित्यिक भाषा मे साहित्य का सृजन किया जाता हैं। विशिष्ट भाषा से अभिप्राय किसी विशिष्ट विषय विशेष की शब्दावली भाषा ही विशिष्ट भाषा के अंतर्गत आती हैं। राजभाषा और राष्ट्रभाषा के भेद मे सामान्यतः न्याय नहीं किया जाता है बल्कि एक ही मान लिया जाता है। पर दोनो मे बहुत अंतर है। जब कोई भाषा किसी राष्ट्र द्वारा संवैधानिक रूप से सरकारी काम काज में प्रयोग के लिए स्वीकार कर ली जाती हैं या वह भाषा जिसे सरकारी कार्यों में प्रयोग के लिए संवैधानिक दर्जा प्रदान कर दिया जाता है तो वह राजभाषा बन जाती हैं। और राष्ट्रभाषा के अंतर्गत वह भाषा आती हैं जिससे राष्ट्र के बहुसंख्यक लोगों भावात्मक एकता के लिए (विभिन्न भाषाओ के बोलने वालो के बीच किसी एक भाषा को स्वीकृति से प्रयोग करना) ध्यान रखते हुए स्वीकृति प्रदान करते हैं। वह राष्ट्रभाषा कहलाती हैं अंतराष्ट्रीय भाषा विभिन्न राष्ट्रो के बीच वार्तालाप तथा पत्र व्यवहार के लिए प्रयोग में लाई जाती हैं।

भाषाओं का अध्ययन भाषा वैज्ञानिकों के द्वारा किया जाता है। अध्ययन की दृष्टि से भाषाओं का वर्गीकरण परिवार के रूप में किया जाता है। 'विश्व में मुख्यतः निम्नांकित भाषा परिवार है 1–भारोपीय, 2–द्रविड, 3–चीनी, 4–सेमेटिक–हैमेटिक, 5–यूरांल–अल्टाइक, 6–काकेशियन, 7–जापानी–कोरियाई, 8–मलयपालिनेशन, 9–आस्ट्रो–एशियन, 10–बुशमैन, 11–बांटू, 12–सूडान, 13–अमरीकी।'

एक परिवार से उत्पन्न भाषा को उस परिवार में ही शामिल किया जाता है जिस परिवार से वह भाषा जन्म लेती है।

भारत मे मुख्यतः चार भाषा परिवारों की भाषायें बोली जाती हैं –

1. भारोपीय (भारत यूरोपीय)
2. द्रविड़ भाषा परिवार
3. आस्टिक एशियन या आग्नेय भाषा परिवार
4. चीनी अथवा एकाक्षरी भाषा परिवार।

द्रविड भाषा परिवार की मुख्य भाषाएं तथा क्षेत्रों में तमिल (तमिलनाडू) मलयालम (केरल), तेलगू (आन्ध्रप्रदेश), कन्नड (कर्नाटक), गौड (म.प्र. में बुन्देलखण्ड तथा आस–पास), ओरॉव (बिहार, उड़ीसा, म.प्र.) आदि है।

आस्ट्रो–एश्यिाटिक भाषा परिवार में स्याम, नीकोवार, कम्बोडिया, बंगला, बिहार, म.प्र., तमिलनाडु आदि क्षेत्र आते है तथा इन क्षेत्रों में संथाली (पूर्वी बिहार तथा पश्चिमी बंगाल), मुंडारी (म.प्र., उड़ीसा, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल) आदि भाषाएं बोली जाती है।

चीनी अथवा एकाक्षरी आषा परिवार के भौगोलिक क्षेत्रों में चीन, बर्मा, तिब्बत आदि आते है। प्रमुख भाषाओं में चीनी (चीन), थाई या स्यामी (स्याम या थाईलैण्ड में) ब्रह्मी या वर्मी (वर्मा में) तिब्बती (तिब्बत में) आदि है। इसी परिवार की गारो, बोडो, नागा, नेवारी आदि भाषाएं भारतीय सीमा के पास प्रयोग की जाती है।

भारत–यूरोप की भाषाओं को भारोपीय परिवार में शामिल किया जाता है। भारोपीय परिवार नाम फ्रेंच विद्वानों की देन है। इसे इण्डो–जर्मनिक, आर्य परिवार, भारत–हित्ती नाम से भी जाना जाता है।

भारत की आर्य भाषाओं में संस्कृत सबसे प्राचीन है। तथा इसी की उत्तराधिकारणी हिन्दी है। हिन्दी शब्द की उत्पत्ति के संबंध में मान्यता है। 'हिन्दी शब्द की उत्पत्ति भारत के उत्तर पश्चिम में प्रवाह मान सिधु नदि से संबंधित है। विदित है कि अधिकांश विदेशी यात्री और अक्रान्ता उत्तर पश्चिम सिहं द्वारा से ही भारत आयें भारत में आने बाले इन विदेशियों ने जिस देश के दर्शन किये वह सिधु का देश था। ईरान (फारस) के साथ भारत के बहुत प्राचीन काल से बहुत संबंध थे और ईरानी सिधु को हिन्दु कहते थे। (सिन्धु––>हिन्दु, स का ह में तथा ध का द में ध्वनि परिवर्तन हुआ) हिन्दी से हिन्द बना और फिर हिन्द में फारसी भाषा के संबंध कारक प्रत्यय् ई लगने से हिन्दी बन गया। हिन्दी का अर्थ है हिन्द का' हिन्दी शब्द के विकास में हिन्दी शब्द का व्यवहारिक तथा हिन्दी साहित्य में अनेक नामों से नामकरण किया गया। हिन्दी के अर्थ में ही हिन्दुई या हिन्दवी रेख्ता, उर्दू, दक्खिनी, हिन्दुस्तानी, खडीबोली शब्दों का प्रयोग किया गया है।

हिन्दी भाषा के विकास को वर्गीकृत कालक्रम दृष्टि से किया गया है। समय दृष्टि से भारतीय आर्य भाषा समूह तीन वर्गे में विभक्त है।

(क) प्राचीन भारतीय आर्य भाषा 1500 ई.पू. से 500 ई.पू. तक
(ख) मध्य भारतीय आर्य भाषा 500 ई.पू. से 1000 ई.पू. तक
(ग) आधुनिक भारतीय आर्य भाषा 1000 ई.पू. से वर्तमान समय तक

(क) प्राचीन भारतीय आर्य भाषा इस काल में संस्कृत को दो भागों में विभक्त किया जाता है. इसे आर्य भाषा या देव भाषा भी कहा जाता है।

वैदिक संस्कृत लगभग 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. का समय वैदिक संस्कृत का माना जाता है। इसके अन्य नाम वैदिक, वैदिकी, छन्दस, छानदस है इस भाषा में वैदिक वार्डमय की रचना हुयी है। जो चारो वैद ब्राम्हण, ग्रंथ और उपनिषदो की रचना की गई है। भाषा का यह रूप ऋगवेद सहिता में देखा जा सकता है।

लौकिक संस्कृत लगभग 1000 ई.पू. से 500 ई.पू. तक का समय लौकिक संस्कृत या क्लासिकल संस्कृत के नाम से जाना जाता है। वाल्मिकी रामायण, महाभारत, पुराण, काव्य, नाटक इस भाषा में लिखे गये। व्यास, भाष, अश्वघोष, कालीदास की रचनाये लौकिक संस्कृत में है।

मध्यभारतीय आर्य भाषा मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं को तीन भाषाओं में बाटा जाता है–

1. प्राचीन प्राकृत या पाली 500 ई.पू. से 100 ई.पू. तक
2. मध्य कालीन प्राकृत या पाली 100 ई से 500 ई. तक
3. परकालीन प्राकृत या अपभृन्श 500 ई. से 1000 तक

पाली पाली वौद्ध धर्म (विशेषतः दक्षिणी वैद्धो) की भाषा है। इसे मागधी या देश आषा भी कहा गया है। भगवान बुद्ध और उनके अनुयायिओं ने इसी भाषा में अपने उपदेश दिये। और बौद्ध साहित्य पाली में लिखा गया। इन्हे त्रिपिटक कहा जाता है। सुत पिटक, विनय पिटक, अभिधम्य पिटक बौद्ध ग्रन्थ है।

प्राकृत भगवान महावीर के सारे उपदेश प्राकृत में ही हैं। प्राकृत भाषा के पांच भेद किए गये हैं। शौरसेनी प्राकृत, अधमागधी प्राकृत और मागधी प्राकृत।

अपभ्रशं अपभ्रशं का शाब्दिक अर्थ है बिगड़ा हुआ या गिरा हुआं। जब भाषा का रूप सुसस्कृत न होकर विगडा रूप हो जाता हैं तो उसे अपभ्रशं कहा जाता है। इसके अन्य नाम अवहट, अवहल्थ, देशभाषा, देशीभाषा आदि हैं। कालिदास के नाटक विक्रमोंवशीय मे निम्न वर्ग के पात्रो द्वारा इसका प्रयोग किया गया हैं।

आधुनिक भारतीय आर्य– भाषा आर्य भाषा का विकास अपभ्रशं से माना जाता हैं। प्राचीन पांच प्राकृतो से पांच अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ है। इन पांच अपभ्रशो के साथ ही ब्राचड़ एंव खस दो अपभ्रशो को और लिया जाता है।

अपभ्रशं	–	**विकसित आधुनिक भाषाए**
1. शौरसेनी	–	पश्चिमी हिन्दी, राजस्थायी, गुजराती
2. महाराष्टी	–	मराठी
3. मागधी	–	बिहारी, बंगाली, उड़िया, असमी
4. अर्धमागधी	–	पूर्वी हिन्दी
5. पैशाची	–	लहँदा
6. ब्राचड.	–	सिन्धी, पंजाबी
7. खस	–	पहाड़ी

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओ का समय लगभग 1000ई, तक माना जाता हैं। परन्तु 900ई. से 1100 ई. तक का समय अवहट्ट का हैं। यह अपभ्रष्ट शब्द का विकृत रूप हैं। इसे अपभ्रंश का परवर्ती अपभ्रंश कह सकते हैं। अवहट्ट अपभ्रंश और आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओ के बीच की संक्रमणकालीन भाषा हैं। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओ का समय प्राचीन हिन्दी लगभग 1000 ई. से 1400ई. तक मध्यकालीन हिन्दी लगभग 1400ई. से 1850ई. तक आधुनिक हिन्दी काल लगभग 1850 ई. से वर्तमान तक होता रहा हैं।

वस्तुतः भाषा की अवधारणा, स्वरूप तथा विकास को जब भाषा वैज्ञानिकों के दृष्टिकोण से देखा जाता है तो निश्चित ही यह ज्ञात होता है कि भाष का जो वर्तमान स्वरूप हम देखते है यह क्षणिक से उत्पन्न नहीं हुआ है। इसके लिये हजारों वर्षों का समय लगा है। हिन्दी शब्द की उत्पत्ति एक शोध का विषय रहा है हिन्दी भाषा का विकास भी अनेक सोपानों से गुजरता हुआ वर्तमान स्वरूप तक पहुंचा है। हिन्दी का उद्‌भव और विकास संस्कतृ से प्रारंभ होकर वर्तमान समय तक विकास के पथ पर गतिमान है। भाषा के मध्यकाल में विकसित अपभ्रंश शौरसेनी अर्द्‌धभागधी, मागधी से हिन्दी का विकसित रूप स्थापित हुआ और इस प्रकार हिन्दी संस्कृत, ––> पालि, ––> प्राकृत, ––> अपभंश, ––> अवहट्, हिन्दी/ प्रारंभिक हिन्दी के रूप में विकसित हुई।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. डॉ. कपिलदेव व्दिवेदी भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र प्रकाशन विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 2010 ई पृष्ठ 29–30
[2]. श्री जगन्नाथदास रत्नाकर बिहारी रत्नाकर प्रकाशन जयभारती प्रकाशन, इलाहबाद 2006, पृ–40
[3]. प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल हिन्दी भाषा संरचना प्रकाशक मप्र हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2012, पृ. 9
[4]. डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना प्रकाशन, भारत भवन 2011 पृ. 2
[5]. डॉ. भोलानाथ तिवारी भाषा विज्ञान प्रकाशन किताब महल, इलाहबाद 2009 पृ. 108
[6]. संजीव कुमार : सामान्य हिन्दी, प्रकाशन, लूसेन्ट, 2007 पृ. 2